

विचार बिन्दु

में ईश्वर से डरता हूँ और ईश्वर के बाद उससे डरता हूँ
जो ईश्वर से नहीं डरता। -शेख सादी

स्वतंत्रता दिवस पर लोकतंत्र के भविष्य की चिंता

हम भारत के लोग कल देश का 78वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाएंगे। पिछले 77 सालों में देश ने प्रगति के अनेक सोपान चढ़े हैं। इन सोपानों पर हम सहज ही गर्व कर सकते हैं। तिजारात करने आए अंग्रेज, जो यहां के मालिक बन बैठे थे, जब वापस अपने वतन लौटे तब इस देश को कंगाल छोड़ गए थे। भारत ने अपने को फिर से बनाया। संविधान निर्माताओं ने न्याय और समता वाले समाज की रचना के वास्ते संसदीय लोकतंत्र वाले गणतंत्रिक राज्य की व्यवस्था दी। मगर तीन चौथाई सदी के बाद भी इस देश में लोकतंत्र की वैसी इमारत खड़ी नहीं हो पाई है जिसमें न्याय, समानता और आपसी प्रेम का घर बसा हो। कैसी विडंबना है कि इतने लंबे समय तक, जब लोकतंत्र की जड़ें गहरी जम जानी चाहिए थी, उसके भविष्य की चिंता करनी पड़ रही है। अजीब बात यह है कि सबको अपने-अपने राजनीतिक विरोधियों से ही लोकतंत्र को खतरा नज़र आ रहा है। राज में आने की प्रतिस्पर्धा की राजनीति के लोग प्रेम और युद्ध में सब जायज के सिद्धांत पर चलते हुए नई डिजिटल तकनीकों के उपयोग से अपने-अपने कथाक्रम बना रहे हैं और आभासी दुनिया में प्रचार करके असली दुनिया में विभाजन रेखाएं खींच रहे हैं। लोकतंत्रिक संस्थाओं को अयोग्य हाथों में सौंपना तथा लोकतंत्र की संविधानमूढत शक्तियों को अपनी व्याख्या के अनुसार काम में लेना अब सामान्य चलन बन गया है। लोक सेवा आयोगों के सदस्यों और विश्वविद्यालयों में कुलपतियों की नियुक्तियों तथा उनके कामकाज के हाल हम देख चुके हैं। लोकतंत्र की सर्वोच्च संस्था विधायिका में गंभीर चर्चाओं के स्थान पर हुड़दंग अधिक होता है। कार्यपालिका सामंती काल से चले आ रहे आक्रंद प्रशासक की दलदल में और गहरे धंसी चली जा रही है। मुकदमों के भारी बोझ तले दबी न्यायपालिका तुरंत सुनवाई के लिए किस पर मेहरबान होगी कोई नहीं जानता। रियासतों के एकीकरण के बाद सामंती शासन से लोकतंत्रिक व्यवस्था में पूर्ण बदलाव की मंजिल अब भी दूर तक नज़र नहीं आती। वह इसलिये कि भारतीय समाज भौतिक रूप से भले ही आधुनिक हो गया हो, किन्तु वह शोषण, ऊंच-नीच और अधिनायकवाद के बोझ वाले सामंती सोच से मुक्त नहीं हो सका है। लोकतंत्रिक राजनीति, जिसे सेवा का उद्यम होना थावह केवल राज करने का जरिया बन कर रह गई है। महात्मा गांधी ने राजनीति को पवित्र बनाने की कोशिश की थी। वे अपने सीने पर गोली खाने तक राजनीति में ही नहीं प्रत्येक मानव के जीवन में सत्य और अहिंसा की मर्यादा स्थापित करने में लगे रहे। उनके बाद किसी ने उस तरफ नहीं देखा। लोकतंत्रिक व्यवस्था के केंद्र में मनुष्य होता है। सारी व्यवस्थाएँ उसकी उन्नति और बहदुदी के लिए होती हैं। मगर आज्जादी का यह दिवस ऐसी लोकतंत्रिक मर्यादाओं को तिरोहित होता देख रहा है।

स्वतंत्रता दिवस के मौके पर याद आता है 25 नवंबर 1949 को संविधान सभा में दिया गया डॉ. भीमराव आंबेडकर का भाषण। उन्होंने कहा था: अगर हम लोकतंत्र को सिर्फ दिखावे में ही नहीं, बल्कि वास्तव में भी बनाए रखना चाहते हैं, तो हमें अपने सामाजिक और आर्थिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए संवैधानिक तरीकों को अपनाना चाहिए... इसका मतलब है कि हमें सचिनय अन्ना, असहयोग और सत्याग्रह के तरीकों को छोड़ देना चाहिए... ये तरीके अराजकता के व्याकरण के अलावा और कुछ नहीं हैं और जितनी जल्दी उन्हें छोड़ दिया जाए, हमारा लिए उतना ही बेहतर है। उन्होंने दूसरी बात कही कि "अपनी स्वतंत्रता को किसी महान व्यक्ति के चरणों में न समर्पित करें, या उसे ऐसी शक्तियों को न सौंपें जो उसे उनकी संस्थाओं को नष्ट करने में सक्षम बनाती हैं..." यह सावधानी भारत के मामले में ... कई अधिक आवश्यक है क्योंकि यहां भक्ति या जिसे भक्ति का मार्ग या नायक-पूजा कहा जा सकता है, उसकी राजनीति में ... भूमिका नहीं अधिक है। धर्म में भक्ति आत्मा की मुक्ति का मार्ग हो सकती है, लेकिन राजनीति में भक्ति या नायक-पूजा निश्चित रूप से पतन और अंततः तानाशाही का मार्ग होती है। उन्होंने यह भी कहा कि हमें केवल राजनीतिक लोकतंत्र से संतुष्ट नहीं होना है बल्कि हमें अपने राजनीतिक लोकतंत्र को सामाजिक लोकतंत्र भी बनाना चाहिए। राजनीतिक लोकतंत्र तब तक नहीं टिक सकता जब तक उसके आधार में सामाजिक लोकतंत्र न हो। सामाजिक लोकतंत्र का अर्थ उन्होंने बताया कि एक ऐसी जीवन पद्धति जो स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व को जीवन के सिद्धांतों के रूप में मान्यता दे। आजादी के इस दिवस पर हम पाते हैं कि महात्मा गांधी और आंबेडकर की विरासत लेकर चलने का दवा करने के बावजूद यह देश ऐसा नहीं कर सका है। लोकतंत्र के सिद्धांतों में सामूहिकता पहली शर्त होती है जिसमें अल्पमत को सम्मान देने की मर्यादा होती है। मगर अब निर्वाचित प्रतिनिधि चाहें वे किसी भी वैचारिक रंग के हों में के अहंकार में बात करते हैं, सामूहिक हम को भाषा में नहीं। कैसी अनाड़ी बात है कि आंबेडकर ने जो बात 1949 में संविधान सभा में कही उस पर लोकतंत्र के इन 80 वर्षों में केवल, एक छोटे काल खंड में उभरी,

धर्म में भक्ति आत्मा की मुक्ति का मार्ग हो सकती है, लेकिन राजनीति में भक्ति या नायक-पूजा निश्चित रूप से पतन और अंततः तानाशाही का मार्ग होती है। उन्होंने यह भी कहा कि हमें केवल राजनीतिक लोकतंत्र से संतुष्ट नहीं होना है बल्कि हमें अपने राजनीतिक लोकतंत्र को सामाजिक लोकतंत्र भी बनाना चाहिए। राजनीतिक लोकतंत्र तब तक नहीं टिक सकता जब तक उसके आधार में सामाजिक लोकतंत्र न हो।

एक राजनैतिक पार्टी ने अमल करने की इमानदार कोशिश की। वह थी स्वतंत्र पार्टी। सत्ताकक्ष कांग्रेस पार्टी के सामने एक गैर-वामपंथी विपक्ष खड़ा करने के लिए 1959 में इस पार्टी का गठन किया गया था। इसके दो प्रमुख नेताओं सी. राजगोपालाचारी, जो राजाजी के नाम से अधिक जाने जाते हैं, और मीनू मसानी ने इस पार्टी के जरिए पहली बार देश में कांग्रेस के व्यावहारिक विफल्य का रोड़मप बनाया। दोनों नेताओं के बीच जबरदस्त तालमेल था। दश में से नौ मौकों पर घटनाओं की उनकी व्याख्या एक समान हुई और उनकी बनाई नीतियों और रणनीतियों से उनकी पार्टी को जबरदस्त सुरुआती सफलता मिली। राजाजी अपनी पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी और पार्टी कार्यकर्ताओं की बैठकों में दोहराते रहते थे कि "हमें सत्ता के पीछे नहीं भागना चाहिए, सत्ता को हमारा पीछा करना चाहिए।" लोगों को शिक्षित करके सत्ता की तलाश करने को उन्होंने पार्टी का उद्देश्य बताया। ट्रेड यूनियनों को मोर्चों के रूप में चलाने की कोशिश नहीं करना और न ही छात्र संघों में हस्तक्षेप करना इस पार्टी की नीति थी। उसका मानना था कि क्योंकि ट्रेड यूनियनों को श्रमिकों के हितों की देखभाल के लिए बनाया गया है और राजनीतिक दलों द्वारा इनका शोषण नहीं किया जाना चाहिए। इसी प्रकार छात्रों को राजनीति में आने से पहले अपनी पढ़ाई पूरी करनी चाहिए। संसद और राज्य विधानसभाओं और परिषदों में पार्टी के निर्वाचित विधायकों को वॉक-आउट करने की अनुमति यह पार्टी नहीं देती थी। अपने 15 वर्षों के अस्तित्व के दौरान, पार्टी के संसदों ने केवल एक बार लोकसभा में वॉकआउट किया और वह भी तब जब संविधान के 17वें संशोधन पर बहस हुई थी जिसमें किसानों की जमीन के अधिग्रहण की व्यवस्था थी और पार्टी के प्रस्ताव पर अध्यक्ष द्वारा दिया गया निर्णय उन्हें स्पष्ट रूप से अनुचित लगा। एक बार तो ऐसा अवसर भी आया जब पार्टी के विधायक आंध्र विधानसभा से बहिर्गमन कर सदन के बाहर प्रदर्शन करने लगे तो पार्टी के केंद्रीय संसदीय बोर्ड ने ऐसा करने वाले विधायकों के समूह के नेता, जो राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य भी थे, को ताड़ना देते हुए ऐसा दोबारा ऐसा न करने की चेतावनी दी। उस संसदीय बोर्ड ने अपना यह निर्णय दर्ज किया: जब विधानसभा का सत्र चल रहा हो, तब स्वतंत्र पार्टी के सभी विधायकों को विधानसभा के अंदर होना चाहिए, न कि बाहर। उन्हें बाहर खड़े होकर विरोध करने के लिए नहीं चुना गया है। वे सदन में रहने के लिए चुने गए हैं और अगर चर्चा के तहत मुद्दे पर पार्टी की स्थिति विरोध की है तो उसे वहां दर्ज कराते हैं।

स्वतंत्र पार्टी विरोध के लिए प्रविष्ट करने में विश्वास नहीं रखती थी। उसका मानना था कि ऐसे मौके भी आ सकते हैं जब पार्टी को एक सरकारी प्रस्ताव का समर्थन करना पड़े, यदि यह राष्ट्रीय हित में हो और भले ही इसका मतलब विपक्ष में अन्य दलों के साथ रैक तोड़ना हो। एक अवसर पर श्रीमती इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस पार्टी ने सभ्ये के अवमूल्यन के लिए विपक्षी दलों का समर्थन मांगा। अर्थव्यवस्था बुरी तरह से संकट में थी और विदेशी व्यापार के अधिक होने से बड़े पैमाने पर मार पड़ रही थी। पार्टी ने कांग्रेस का समर्थन करने का फैसला किया, भले ही अन्य विपक्षी दलों ने अवमूल्यन का विरोध किया और उससे नाराज हुए, लेकिन पार्टी अपनी जमीन पर डटी रही। 1962 और 1971 के बीच कई मौकों पर ऐसा भी हुआ जब पार्टी ने अविवशान प्रस्तावों में भाग लेने से मना कर दिया। पार्टी ने यह स्पष्ट कर दिया कि अविशवास प्रस्ताव गंभीर संसदीय हथियार होता है जिसका काम से कम इस्तेमाल किया जाना चाहिए, उसे तुच्छ नहीं मानना जाना चाहिए। पार्टी में अंतरिक लोकतंत्र को स्वीकार करने और पार्टी की एकता के नाम पर अपने सदस्यों को बांधे नहीं रखने का सिद्धांत भी इस पार्टी ने दिया। उसकी नीति थी कि पार्टी विपक्ष का उपयोग इतना दमनकारी नहीं हो कि पार्टी के विधायक केवल वोटिंग मशीन बन कर रह जाएं। मगर आज्जाद भारत की दलीय राजनीति भटकती चली गई और लोकतंत्रिक मूल्यों को मजबूती देने के बजाय इनके नेता सामंती व्यवहार में रस लेते हुए उसे आज ऐसे मुकाम पर ली आए हैं जहां सभी को लोकतंत्र के भविष्य की चिंता होने लगी है।

-अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)



अविनाश जोशी

कार्बन व्यापार में चीन, अमेरिका, रूस, जर्मनी, दक्षिण कोरिया बड़े नियंत्रक हैं। इन देशों में जिन कंपनियों का कार्बन उत्सर्जन देश के सालाना कार्बन उत्सर्जन का साठ फीसद से ज्यादा है, वे अपने उत्सर्जन की भरपाई 'कार्बन क्रेडिट' खरीद कर करना आसान मानती हैं। प्रति इकाई 'कार्बन क्रेडिट' के बाजार भाव में मांग के अनुसार उतार-चढ़ाव आता रहता है। मसलन, चीन में सरकार की कार्बन उत्सर्जन रोकने पर सख्ती की नीति के कारण उद्योग 'कार्बन क्रेडिट' खरीदने की होड़ में हैं। एक रिपोर्ट से पता चलता है कि साल 2021 में कुल कार्बन उत्सर्जन के आठ हिस्से में चीन, अमेरिका और यूरोपीय संघ के देश शामिल थे। इस मामले में भारत का योगदान महत्त्व का साठ फीसद है, जबकि चीन इतना सख्त फीसद कार्बन उत्सर्जन करता है जो अपने आप में सर्वाधिक है विश्व के सभी देशों में औद्योगिक गतिविधियों के विस्तार से ठीन हाउस गैसों का उत्सर्जन काफी तेज गति से बढ़ रहा है, जिसके कारण पृथ्वी के तापमान में निरंतर वृद्धि होती जा रही है। तापमान में होने वाली इस वृद्धि में सबसे अधिक योगदान कार्बन डाई ऑक्साइड गैस का है। जिन देशों में औद्योगिक गतिविधियाँ ज्यादा होती हैं, प्रदूषण को नियंत्रित करने के उपायों को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जो कार्बन उत्सर्जन को कम करने में मदद कर सकते हैं।

कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए विश्व के विकसित और विकासशील देशों को बाध्य करती है।

अमेरिका जैसे देश अमेरिका प्रथम की नीति पर चलते हैं, जबकि भारत जैसे देश 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सिद्धांत को अपनाते हैं। यही कारण है कि सर्वाधिक कार्बन उत्सर्जन करने वाले अमेरिका जैसे देश औद्योगिकीकरण और विकास को सर्वोपरि लक्ष्य बनाए हुए हैं। जब कभी विकास की ओर नई प्रगति होती है तो उसका सीधा असर पर्यावरण पर पड़ता है और यही असर एक आदत का रूप ले ले, तो दुष्प्रभाव की पूरी संभावना बन जाती है। ऐसे दुष्प्रभाव से समय रहते निपटान न जाए तो पृथ्वी और उसके जीव अस्तित्व को लेकर एक नई चुनौती से गुजरने लगते हैं।

भारत में कार्बन उत्सर्जन को नियंत्रित करने के लिए कई नीतियाँ और उपायों की प्राथमिकता दी जा रही है भारत सरकार ने वायु प्रदूषण और कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए 'निग्लेशन स्ट्रेटजी 2030' जैसी पहलों को प्रोत्साहित किया है, जो विद्युत, वायुमार्ग, हाइड्रिड और इलेक्ट्रिक वाहनों के प्रयोग को बढ़ावा देते हैं। भारत ने नवाचारी और स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों के प्रति विशेष ध्यान दिया है, जैसे कि सौर ऊर्जा और जल परियोजनाएँ, जो कार्बन नकारात्मक योगदान को बढ़ावा देती हैं। वनस्पति संरक्षण और वन्यजीव सुरक्षा के उपायों का पे भी ध्यान दिया जा रहा है, क्योंकि वनस्पतियों और वन्यजीवों का संरक्षण भी कार्बन संकेत को संभावित रूप से कम कर सकता है। भारत सरकार ने निरंतर वृद्धि होती जा रही है। तापमान में होने वाली इस वृद्धि में सबसे अधिक योगदान कार्बन डाई ऑक्साइड गैस का है। जिन देशों में औद्योगिक गतिविधियाँ ज्यादा होती हैं, प्रदूषण को नियंत्रित करने के उपायों को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जो कार्बन उत्सर्जन को कम करने में मदद कर सकते हैं।

कार्बन उत्सर्जन से यहा तापत्य कार्बन डाईऑक्साइड, मेथेन, और अन्य प्रकार के कार्बन का वायुमंडल में उत्सर्जन से है। ये उत्सर्जन मुख्य रूप से वाहनों की इंधन जलाने, उर्जा उत्पादन, और औद्योगिक गतिविधियों से होता है, जिसके परिणामस्वरूप वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों का स्तर बढ़ता है और जलवायु परिवर्तन के प्रमुख कारकों में से एक बनता है। मानव द्वारा किये जा रहे उत्सर्जन के कारण औद्योगिक क्रांति से लेकर अब तक पृथ्वी की सतह का औसत तापमान पहले ही 1 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है और कार्बन उत्सर्जन में निरंतर वृद्धि से हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए पृथ्वी और अधिक खतरनाक जगह साबित होगी।

हम अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में छोटे-छोटे बदलाव करके कार्बन उत्सर्जन में कमी कर सकते हैं, जैसे सौर, पवन ऊर्जा के इस्तेमाल और पौधापोषण आदि से कार्बन उत्सर्जन में कमी की जा सकती है। कार्बन उत्सर्जन और अन्य ग्रीनहाउस गैसों का वातावरण में इंधन, कच्चे तेल और कोयले के जलने से होता है। घर में बिजली के अधिक प्रयोग से और फ्लोरिसेंट बल्बों के इस्तेमाल से कमी की जा सकती है। प्लास, धातुओं, प्लास्टिक और कागज को एक से अधिक बार उपयोग में ला कर भी हम कमी कर सकते हैं, इसके साथ ही निरंतर चलने वाले रफ्रिजरेटर की स्प्रीड धीमी रख कर या घर की दीवारों पर हल्के रंग का पेंट भी इसमें काफी मददगार होते हैं। वैसे तो इंडिकेटर और स्टैंडबाय मोड पर रहने वाले गैजेट्स भी कई किलो कार्बन डाईऑक्साइड उत्पन्न करते हैं। कुछ छोटी छोटी बातें एमम आदतें भी सहायक हो सकती हैं जैसे उचित मात्रा में कपड़े एकत्र होने पर भी धोना। ज्यदा अन्धा है कि यह दूसरी लाइन और भी बड़ी

सकते हैं, अधिक से अधिक वृक्ष लगाने का प्रयास करें, क्योंकि एक अकेला वृक्ष अपनी जिन्दगी में एक टन कार्बन डाईऑक्साइड सोखता है, भोजन को बर्बाद करने से बचे, क्योंकि इसे तैयार करने में काफी ऊर्जा का उपयोग होता है। इस तरह हम प्रकृति एवम पर्यावरण के प्रति जागरूक समाज के निर्माण में सहायक हो सकते हैं।

दुनिया भर में जलवायु परिवर्तन और बढ़ते तापमान को लेकर लंबे समय से चिंता जताई जाती रही है। इस मसले पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन होते रहते हैं और उनमें वैश्विक स्तर पर तापमान में बढ़ोतरी के कारणों और उसके समाधान पर विचार किया जाता है। लेकिन जमीनी स्तर पर इस सबका हासिल क्या रहा है, यह छिपा नहीं है। हालात यह हैं कि तापमान में बढ़ोतरी की समस्या अब ऐसी शक्ति अखिरतार करती जा रही है, जिसमें ऐसा लगता है मानो बहुत कुछ हाथ से छूट रहा हो। पिछले कुछ समय से मौसम के अति कठोर होते जाने की वजह से तापमान के इसी उतार-चढ़ाव में छिपी है। अमेरिका के दक्षिण-पश्चिम और मेक्सिको में जानलेवा गर्म हवाएँ चल रही हैं तो यह बेवलेह नहीं है। अब अगर दुनिया के दूसरे हिस्सों में भी बढ़ते तापमान की वजह से विगड़ते हालात की खबरें आ रही हैं, तो यह एक तरह से गहराती समस्या की ही कड़ियाँ हैं। विडंबना यह है कि आए दिन होने वाली बैठकों में वैज्ञानिक और पर्यावरणविद जलवायु में आती विकृति के लिए कोयला, तेल और प्राकृतिक जीवाश्म इंधन के उपयोग से जलवायु की निरंतरता में होने वाले बदलाव को जिम्मेदार ठहराते हैं। तात्कालिक स्तर पर इस मसले के हल के लिए कुछ बिंदुओं पर सहमति भी बनती है। लेकिन फिर कुछ समय बाद सब कुछ पहले की तरह चलने लगता है।

कोरोना महामारी के दौरान जब दुनिया के ज्यादातर देशों में पूर्णबंदी लगी

थी, तब कार्बन उत्सर्जन में न केवल गिरावट आई थी, बल्कि आसमान कहीं अधिक साफ और प्रदूषण मुक्त देखने को मिला था। दरअसल कार्बन उत्सर्जन को लेकर दुनिया के देशों में कभी एकजुटता देखने को मिली ही नहीं। विकसित और विकासशील देशों में इसे लेकर आरोप-प्रत्यारोप भी व्यापक पैमाने पर रहे हैं। इतना ही नहीं, कार्बन उत्सर्जन को लेकर सभी देश बंध-चूड़ कर अंकुश लगाने की बात करते रहे और हकीकत में नतीजे इसके विपरीत बने रहे। पृथ्वी सादृ चार अरब साल पुरानी है और कई कालखंडों से गुजरते हुए मौजूदा पर्यावरण में है। यदि इससे वाकई बचना है तो वैश्विक उत्सर्जन में हर साल औसतन एक सौ चालीस करोड़ टन की कटौती करनी होगी तब कहीं जाकर 2070 तक कार्बन उत्सर्जन के मामले में शून्य तक पहुँचा जा सकेगा। कार्बन उत्सर्जन से उत्पन्न समस्या निजी नहीं है और दुनिया के देश भले ही आर्थिक संपन्नता और सभ्यता के चरम पर हों, मगर पृथ्वी को उसी की भाँति बनाए रखने में यदि सफल नहीं होते हैं तो दुनिया को इसकी बड़ी कीमत चुकाने के लिए तैयार रहना होगा।

भारत की अपनी चिंताएं हैं। एक तरफ जहाँ करोड़ों लोगों को भुखमरी और गरीबी से बाहर निकालना है जिसके लिए आर्थिक विकास अपरिहार्य है, तो दूसरी तरफ कार्बन उत्सर्जन से उत्पन्न समस्या में भी कमी लाना है। ये दोनों दुष्कण एक-दूसरे के अंतर्विरोधी हैं। यही कारण है कि भारत सौर और पवन ऊर्जा के विस्तार से अपनी अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने का एस्ता भी खोज रहा है। वास्तव में कार्बन उत्सर्जन में कटौती को लेकर सम्मेलनों में शासक प्रदिधान वाले देशों की कमी नहीं है, मगर देश के भीतर आर्थिक विकास को आपा-धापी के चलते वायदों पर भी खर्च नहीं उतर पाता है।

-अविनाश जोशी,
स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक

जालोर के सरकारी स्कूल ने प्रतिभाओं के होर्डिंग्स और पोस्टर लगाने की पहल की

रेवत ग्राम के विद्यालय में विविध क्षेत्र की प्रतिभाओं का भी परिचय दिया है

जालोर, (कास)। प्रदेश में नामी-गिरामी शिक्षण संस्थानों के बीच जहाँ हर वर्ष नए शैक्षणिक सत्र में एडमिशन के लिए लुत्तापने के लिए उच्च प्राप्तांकों वाली मार्कशीट को दर्शाते होर्डिंग-पोस्टर का वार दिखाई देता है, वहीं जालोर के एक सरकारी स्कूल ने बच्चों पर प्राप्तांकों के मानसिक तनाव को कम करने वाली अभिव्यक्त पहल की है जो अभिभावकों और शिक्षा क्षेत्र में बहुत सराही जा रही है।

असल में प्रतिभाएं आमतौर पर सिर्फ प्राप्तांकों (प्रतिशत) के आधार पर ही तय होती है, लेकिन जालोर जिले के रेवत ग्राम स्थित इस विद्यालय में प्राप्तांकों के अलावा विविध क्षेत्र की अपनी प्रतिभाओं का भी परिचय दिया है। नतीजे इस स्कूल की भी बहुत अच्छे हैं लेकिन साथ-साथ विद्यालय ने अपने प्रवेशोत्सव पोस्टर नृत्य प्रतिभाएं, खेल प्रतिभाएं,

विद्यालय की इस पहल को अभिभावकों और शिक्षकों सहित राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के शिक्षाविदों ने अनुकरणीय बताया है

सुंदर लेखन प्रतिभाएं, चित्रकला प्रतिभाएं, गायन कला प्रतिभा, सिलाई कला प्रतिभा, काव्य प्रतिभा और कापट प्रतिभा के अलावा सोशल मीडिया प्रतिभा तक का परिचय दिया है। इस सरकारी विद्यालय ने श्रेष्ठ अंकों वाले विद्यार्थियों के साथ ही विभिन्न बहुआयामी प्रतिभाओं के होर्डिंग और पोस्टर लगाकर नई मार्केटिंग और ब्रांडिंग करने की पहल की है, जिसमें अंकों की मेरिट के साथ ही स्पोर्ट्स, डांस, सिंगिंग, पेंटिंग, बेस्ट राईटिंग, पॉइम्स, स्पीच आदि गतिविधियों को भी शामिल कर विविध टैलेंटेड प्रतिभाओं के

होर्डिंग्स और पोस्टर लगवाकर सर्वांगीण विकास का मैसेज दिया है। विद्यालय के प्राचार्य छानुपुरी गोस्वामी ने बताया कि व्याख्याता संदीप जोशी ने सभी शिक्षकों के साथ मिलकर रेवत स्कूल में यह नई पहल की है। शिक्षक जोशी के मुताबिक कोचिंग एवं ट्यूशन के दबाव, अंकों की जानलेवा प्रतिस्पर्धा, सफलता का प्रेशर और असफलता का डर आदि से बचने और अभिभावक भारी तनाव में जी रहे हैं। परीक्षा में अंक प्राप्त करने की होड़ के समानांतर पीक लाइन बहुआयामी प्रतिभाओं की भी खड़ी करनी होगी। ज्यदा अच्छा है कि यह दूसरी लाइन और भी बड़ी

हो। रेवत के सरकारी स्कूल ने इस दिशा में एक कदम बढ़ाया है, समस्या से समाधान की ओर।

इस बार प्रवेश उत्सव के दौरान 12वीं बोर्ड कक्षा में सर्वोच्च 95.20 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाली विद्यार्थी के साथ-साथ विद्यालय की अन्य विभिन्न प्रकार की प्रतिभाओं के भी चित्र होर्डिंग्स, पोस्टर इत्यादि पर लगाए हैं। जिनमें खेल प्रतिभा, पेंटिंग प्रतिभा, नृत्य प्रतिभा, सुंदर हैंड राइटिंग वाले विद्यार्थी, अच्छा क्राफ्ट करने वाले विद्यार्थी, गायन प्रतिभा, सुंदर कविता पाठ करने वाले विद्यार्थी भी नाम और फोटो प्रकाशित किए हैं। विद्यालय की इस पहल की अभिभावकों और शिक्षकों द्वारा सराहना हुई है, साथ ही राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के शिक्षाविदों ने भी इस पहल को अत्यंत महत्वपूर्ण एवं

अनुकरणीय बताया है। एनसीईआरटी के संयुक्त निदेशक प्रो. श्रीधर श्रीवास्तव ने विद्यालय को शुभकामनाएं देते हुए लिखा कि यह बहुत सुंदर विचार है। हर तरह की प्रतिभाओं को स्थान एवं सम्मान मिलना चाहिए। यह हृदयक 2.0.2.0 के प्रथम सिद्धांत का परिपालन है। विद्यालय को बधाई।

इसी प्रकार एनसीईआरटी के पूर्व निदेशक प्रोफेसर जेएस राजवत, देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार से जुड़े गुजरात निवासी एवं वर्तमान में अमेरिका निवासी शिक्षाविद् चेताराम जोशी सहित अनेक शिक्षाविदों, प्रशासनिक अधिकारियों ने इस पहल की सराहना की है। अमरिका में कार्यरत भारतीय मूल के वैज्ञानिक डॉ. तेज पारीक ने विद्यालय के इस नवाचार की प्रशंसा की है।

डिग्गी कल्याणजी का लकखी मेला परवान पर, तीसरे दिन उमड़े श्रद्धालु

मालपुरा, (निर्स)। तीर्थ स्थल डिग्गी में चल रहे डिग्गी कल्याण महाराज का 59वां लकखी मेला तीसरे दिन मंगलवार को परवान पर रहा। भगवान विष्णु के स्वरूप कल्याणधणी की मनमोहक झाँकी के दर्शन कर चरणों में शीश झुकाने के लिये कल्याण भक्त अनवरत डिग्गी की ओर बढ़ रहे हैं।

कल्याण भक्तों की सेवा-चाकरी की लोगों में होड़ सी मची हुई है। जयपुर रोड बजरी नाँके के पास लगे श्रीजी भंडारा व डिग्गी मोड़ से आगे लगे श्याम मित्र मंडल के भंडारे में अपनी सेवाएं दे रहे सेवक पदायत्रियों में कल्याणधणी का वास मानकर उनके चरण धोने व भंडारे में तैयार किये गये कई प्रकार के व्यंजन भक्तों को परोसकर स्वयं को श्रीजी के समीप होने का अहसास कर रहे हैं। डिग्गी तीर्थ की ओर आने वाले छोटे से बड़े हर



डिग्गी लकखी मेले में श्रीजी के दर्शन के लिये आस्था का सैलाब उमड़ा।

एक मार्ग पर श्रीजी भक्तों की टोलियाँ कल्याणधणी के जयकरों लगाते हुये हाथों में केसरिया ध्वज लिये केसरिया कल्याण मान भूल मल जाय्यो सा, उंची पेड़ी कलां धणी की मोसू चढ़ चो न उतरयो जाके जिको मारा कलाधणी ने मारो हाथ पकड़ ले जाये, जैसे भजनो पर नाचते-गाते झुमते श्रीजी भक्त डिग्गी की

ओर बढ़ रहे हैं। छोटी-छोटी पगडंडियों पर लगी भक्तों की लकखी करों दूर से ही भक्तों को अपनी ओर आकर्षित कर रही है। कई शारीरिक कष्टों से छुटकारा पाने की मन में अरदास लिये श्रद्धालु शय में श्रीकल लेकर कनक दण्डवत करते श्रीजी के दरबार में पहुँच रहे हैं। 11 अगस्त को जयपुर से रवाना हुई लकखी

श्याम मित्र मंडल व श्रीजी भंडारा में कल्याण भक्तों की सेवा-चाकरी की होड़ लगी

पदयात्र के साथ ही शुरू हुआ मेले के आज तीसरे दिन मंगलवार को डिग्गी पहुँचे कल्याण भक्तों का आंकड़ा एक लाख की संख्या को पार कर गया। यात्रा मार्ग में जगह-जगह लगे भंडारों के अतिरिक्त पदायत्रियों की सेवा के लिये सेवादार दूर-दराज से पहुँच डिग्गी पहुँच भक्तों को केला, सेव, काजू, वनस्पति सहित नौवू, सिंकड़ी ईत्यादि परोस सेवा में जुटे हुये हैं। प्रदेश भर से डिग्गीगाम के लिये रवाना हुई पदयात्राएं डिग्गी पहुँचने का क्रम लगातार बढ़ रहा

है। श्रीजी भक्तों की सुरक्षा के लिये मंदिर ट्रस्ट की ओर से चौपड़ चौराहे से महिला व पुरुष की अलग-अलग रैलिंग लाई गई है तो सात सौ से अधिक पुलिस के अधिकारी व जवान चौपे-चपे पर तैनात हैं। टोंक व वैशाली डीपी की ओर से दर्शनों के पश्चात कल्याण भक्तों को गंतव्य स्थान पर पहुँचाने के लिये अतिरिक्त बसें लगाकर यात्रियों को किराये में 50 प्रतिशत की छूट दी जा रही है। एसडीएम कपिल शर्मा, तहसीलदार राहुल पारीक, एएसपी रामकुमार कल्या, डीएसपी महेश्वर मीणा, विकास अधिकारी सतपाल कुमावत, डिग्गी थानाधिकारी कपान सिंह, मैला कन्ट्रोल रूम से मैला व्यवस्थाओं की निगरानी कर रहे हैं। चिकित्सा विभाग की टीमों तो एनसीसी व स्काउट कैडेट्स मेले में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।



पंडित अनिल शर्मा

शुक्र-सिंह, शनि-कुम्भ, राहु-सिंह, केतु-कन्या राशि में आज सर्वार्थ सिद्धि योग और अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 12:13 तक है। रविविद्योग सम्पूर्ण दिन-रात है। आज श्री हरि जयन्ती है। श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:17 तक, शुभ 10:54 से 12:31 तक, कर 3:46 से 5:24 तक, लाभ 5:24 से सूर्यस्त तक। राहुकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:02, सूर्यास्त 7:01

राशिफल	मेघ	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
सावन मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत् 2081, अनुराधा नक्षत्र दिन 12:13 तक, ऐन्द्रिय योग सांय 4:05 तक, कौलक करण दिन 10:24 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा। ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-वृष, बुध-सिंह, गुरु-वृष, शुक-सिंह, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में। आज सर्वार्थ सिद्धि योग और अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 12:13 तक है। रविविद्योग सम्पूर्ण दिन-रात है। आज श्री हरि जयन्ती है। श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:17 तक, शुभ 10:54 से 12:31 तक, कर 3:46 से 5:24 तक, लाभ 5:24 से सूर्यस्त तक। राहुकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:02, सूर्यास्त 7:01	अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहने। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।	व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।	विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा।	परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है और उचित परामर्श मिल सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।	घर-परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी और मन में असंतोच बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।	आर्थिक/वित्तीय मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। अटक हुआ घन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होगा।
आज सर्वार्थ सिद्धि योग और अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 12:13 तक है। रविविद्योग सम्पूर्ण दिन-रात है। आज श्री हरि जयन्ती है। श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:17 तक, शुभ 10:54 से 12:31 तक, कर 3:46 से 5:24 तक, लाभ 5:24 से सूर्यस्त तक। राहुकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:02, सूर्यास्त 7:01	आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बनने लगे। अटका हुआ घन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।	मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।	अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। परिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा।	आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ घन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ बनी रहेगी।	व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगे। महत्वपूर्ण कार्यों योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।	नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आशावादन प्राप्त होगा। अटक हुए कार्य बनने लगे। धार्मिक स्थानों की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।